मनोज चित्र कथा

मूल्य 3.50

गंजा बेटा और सात भूत

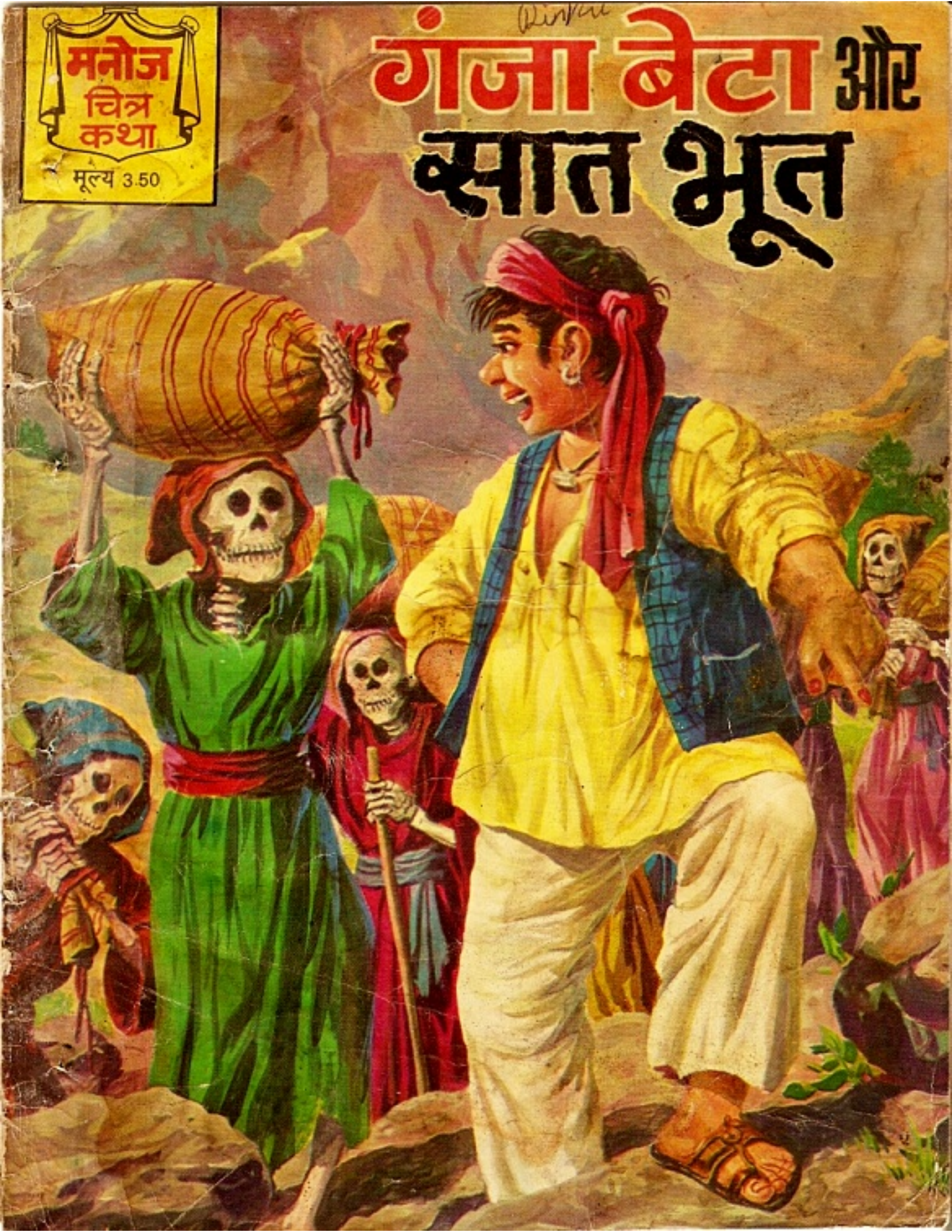

मनोज चित्र कथा

का आगामी प्रकाशन

मनोज चित्रकथा की अब तक प्रकाशित अन्य पुस्तकें

- काला प्रेत और ब्लेक क्रास
- शेरबाज़ और बेरहम लुटेरे
- गंजा बेटा और सात भूत
- दुश्मनों के दुश्मन
- सेठ कूड़ामल
- दानवीर कर्ण
- यम के बेटे
- देश भक्त काला प्रेत
- सीक्रेट एजेन्ट सुलेमान
- काला प्रेत और देश के दुश्मन
- अपने देश के दुश्मन
- शेरबाज़ और काली घाटी के नरभक्षी
- मि० तीस मार खां
- मौत का दूत
- परियों की बेटी
- कंगालू देवता का खज़ाना
- महाबली शेरा और खूनी हीरों का हार
- बाबा रामदेव
- भूत महल
- गुलिवर बौनों के देश में
- मौत की घाटी
- महाबली शेरा और काला प्रेत
- आल्हा ऊदल
- महाबली शेरा
- ड्राक्यूला बालक
- मूर्खराज
- गोरा-बादल
- नेकी का फ़रिश्ता
- यमराज की हार
- तैमूर लंग
- शोलों की घाटी
- साहसी सिन्दबाद

प्रत्येक का मूल्य तीन रुपये-पूरा सेट मंगाने पर डाक व्यय माफ़

प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स 1584 दरीबा कलाँ, दिल्ली-110006
वितरक : राजा सेल्स कॉरपोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

समस्त © सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

गंजा बेटा और सात भूत

बहुत समय पहले की बात है. एक बुढ़िया का एक गंजा बेटा था. वह बहुत आलसी था. घर के किसी भी काम में हाथ बंटाना तो जानता ही नहीं था. पूरी-पूरी खुराक खाकर मजे से खर्राटे भरता था. एक दिन तंग आकर बुढ़िया उसे डंडे से पीटने लगी.

इतना बड़ा हो गया. कब तक तुझे रिबलाती रहूंगी.

ओह मां! बस भी करो.

लेखक: बिमल चटर्जी

जाओ मां! मेरे लिए एक बड़ी-सी रोटी बना लाओ. मैं आज ही काम ढूंढने जाऊंगा.

मां ने बेटे की बात मानकर उसके लिए एक बड़ी-सी रोटी बना दी. रोटी अपने थैले में रखकर बेटा लम्बी यात्रा पर निकल पड़ा.

नदी-नाले पार करके वह चलता ही गया.

अब मैं बिना धन कमाए वापस नहीं लौटूंगा.

इसके बाद वह एक पहाड़ी पर चढ़ा और थक कर एक गुफा के सामने बैठ गया.

उसे बड़े जोरों की भूख लगी थी. अतः पोटली से रोटी निकाली और रग्क टुकड़ा खाया और बड़बड़ाते हुये बोला -
हां, रग्क तो चला गया.
फिर दूसरा टुकड़ा खाते हुये बोला -
और यह दूसरा भी गया-
तीसरा टुकड़ा खाने के बाद-
रग्क और चला गया
रग्क और गया
उसी गुफा के भीतर सात भूत रहते थे. उस समय उनमें से छः सो रहे थे और सातवां पहरा दे रहा था.
उसने सभी को जगाया.
उठो-उठो भाइयों, बाहर शायद कोई बड़ा मजबूत आदमी है, जो हमारी गिनती कर रहा है.
भूत डर गये.
बाहर जाकर पता लगाओ कि वह मजबूत आदमी कैसा है?

सातवें भूत ने गुफा के दरवाजे से छिपकर गंजे बेटे को गुफा के सामने बैठे देखा.

वह बहुत मजबूत और ताकतवर है. हमें उसका स्वागत करना चाहिए, अन्यथा वह हम सबको मार डालेगा.

अच्छा! हम सब उसके पास चलते हैं.

अपने सामने सात भूतों को देखकर गंजे आदमी की घिग्घी बंध गई. उसके मुंह से आवाज नहीं निकली.

शायद यह हमसे मित्रता करना पसन्द नहीं करता.

अन्त में सबसे बड़ा भूत बोला–

हे मालिक, हमारे पास गुफा में बहुत बड़ा खजाना है. हम वह सब आपको दे देंगे, लेकिन आप हमें जान से मत मारिएगा.

अब गंजे की समझ में असली बात आई.

अच्छा! मैं तुम्हें जान से नहीं मारूंगा, गुफा से अपना खजाना लेकर आओ और मेरे घर तक पहुंचा दो.

जी, बहुत अच्छा!

गुफा में जाकर सातों भूतों ने सोने की मोहरों की सात बोरियां अपने सिरों पर रखीं और गंजे आदमी के पीछे-पीछे उसके घर की ओर चल पड़े.

घर पहुंचकर—
मां, यह खजाना सम्भालो. अभी मेरे दोस्त जलाऊ लकड़ी भी लेकर आएंगे ताकि रोटियां बनाने में तुम्हें तकलीफ न हो.
तुम लोग मेरे पीछे आओ
यहां, इस कमरे में रख दो खजाना.
सातों भूत जल्दी ही जलाऊ लकड़ी लाने के लिए रवाना हो गये.
अपने सिरों पर लकड़ी के बड़े-बड़े गट्ठर लादकर वे लौटे और गंजे के घर में डालने लगे.
अब तुम लोग अपने घर जाकर सो जाओ. जब मुझे तुम्हारी जरूरत होगी तो बुला लूंगा.
अच्छा मालिक!

भूत अपनी गुफा की ओर चल पड़े. रास्ते में वे बातें करने लगे-
ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है. उस मजबूत आदमी ने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा.
हमें उस जैसा बहादुर दोस्त मिला है.
हमें खुशी है कि फालतू पड़े हमारे खजाने का अब अच्छा उपयोग होगा.
संयोग से रग्क लोमड़ी छिपकर उनकी बातें सुन रही थी.

वाह रे, गंजे आलसी आदमी! अब तू बहादुर भी बन गया!

मुझे इन भले लोगों की सहायता करनी चाहिए. रग्क निखट्टू ने इनका खजाना ठग लिया है.

अगले ही पल लोमड़ी भूतों के सामने पहुंच गई.
नमस्कार दोस्तो! आप कहां से चले आ रहे हैं?

रे लोमड़ी! अब तुझे क्या बताएं, किसी तरह अपनी जान बचा कर चले आ रहे हैं.
वह मजबूत आदमी तो हमें खत्म ही करने वाला था.

मगर पता नहीं, कैसे वह हम पर दया कर गया और हमारी जान बख्श दी.
हा... हा...हा.. हा... हा...!

अरे - अरे - तुम हंस रहो हो. हमारी जान पर बन आई थी और तुम हंस रही हो?

हंसूं नहीं तो क्या रोऊं? तुम लोग भी कितने मूर्ख हो. अरे, वह गंजा आदमी तो रोज अपनी मां से मार खाता है. वह बड़ा आलसी है, जिसे तुम मजबूत कहते हो.
क्या तुम सच कहती हो?

अरे बिल्कुल सच. मैं उसकी मां के चूजे रोज चुराती हूं. उस गंजे निखट्टू ने आज तक मेरा पीछा नहीं किया.
हमें तुम्हारी बातों पर कुछ-कुछ विश्वास आने लगा है.

विश्वास करो, मैं तुम्हारा खजाना तुम्हें वापस दिला दूंगी.
ठीक है लोमड़ी बहन. हम तुम्हारे कहने से उस आदमी के पास अपना खजाना वापस लेने के लिए चलते हैं.

लेकिन तुम हमें रास्ते में छोड़कर मत भाग जाना.
अजी कैसी बातें करते हैं आप भी भूत महाराज! यदि मेरे मन में छल होता तो मैं तुम्हारी भलाई की बात ही क्यों बताती?
तब ठीक है, चलो.
वे लोग अभी आधी दूर तक ही वापस गये होंगे कि एक-दो भूत डर के मारे कांपने लगे.
भैया, मैं तो नहीं जाऊंगा, मुझे डर लगता है.
अरे इतना भी डर किस बात का. लोमड़ी बहन हमारे साथ जो है.
लोमड़ियों का क्या भरोसा? बहुत धूर्त होती हैं. यह हमें छोड़ कर भाग जाएगी. देख लेना.
ओह! मुझ पर अविश्वास है.
सारे भूत एक जगह रुक गए. लोमड़ी उन्हें भरोसा दिलाने लगी-
देखो भूत महाशय! मैं कसम खाकर कहती हूं कि तुम्हें छोड़कर भागूंगी नहीं.
इस बात का क्या प्रमाण है कि तुम हमें छोड़कर भागोगी नहीं.

यदि आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो आप मुझे किसी रस्सी से बांध दें और उस रस्सी को अपनी कमर मे लपेट लें.

यह बात स्वीकार है.

बूढ़े भूत ने लोमड़ी को बांध लिया और रस्सी अपनी कमर में अटका ली. दूसरे भूत भी उन दोनों से थोड़ी दूर पीछे-पीछे चलने लगे.

गंजा आदमी अपने मकान की छत पर बैठा चारों ओर देख रहा था. अचानक उसने देखा कि लोमड़ी बूढ़े भूत की रस्सी के सहारे लिए आ रही है.

दूसरे भूत काफी पीछे रह गये थे.

वह जोर से बोला -

लोमड़ी, मैंने कहा था कि दहेज में तुम सात भूत लाना. पर तुम केवल एक लायीं.

अपने बेटे की बात सुनकर गंजे की मां भी झपटकर बाहर निकली.

ओ शैतान लौमड़ी, तुम हमेशा लोगों को धोखा देती रही हो. याद रखना, यदि तुम सात भूत नहीं लाई तो तुम्हारे साथ अपने लौमड़ का ब्याह नहीं होने दूंगी.

अच्छा! तो तुम हमें दहेज के रूप में सौंपना चाहती थीं

बूढ़ा भूत वापस भागा. जल्दबाजी में वह लौमड़ी की रस्सी खोल न सका और उसे भी घसीटता ले गया.

दूसरे भूत, जो पीछे-पीछे थे, हड़बड़ाकर उन दोनों के पीछे भागे.

घिसटती हुई लोमड़ी ने आखिर किसी तरह स्वयं को मुक्त किया.

उसके सारे रोएं झड़ चुके थे. शरीर के एक-दो स्थानों पर खून बह रहा था.

वह रोती-बिलखती पश्चाताप करती रही..

मेरी यह दुर्दशा ठीक ही हुई. मैं व्यर्थ ही दूसरों के मामले में टांग अड़ाने गई थी.

उधर गंजा खुश हो रहा था.

सुनो मां, अब कभी भी वे भूत लौटकर नहीं आएंगे.

अब तू निखट्टू नहीं रहा, मेरे लाल! अब मैं शीघ्र ही तेरी शादी करूंगी.

समाप्त

सजा चोर को फांसी राजा को

किसी जमाने में एक गरीब आदमी अपने कच्चे और जर्जर मकान में रहता था. तेज आंधी आने से एक दिन उसका मकान गिर पड़ा. गिरे हुए मकान को देखकर वह रोने लगा.

ऊं... ऊं... मैं गरीब आदमी बर्बाद हो गया.

अरे रोते क्यों हो. हम तुम्हारी मदद करेंगे.

चुप हो जाओ भैया दुखीराम, नया मकान बनाने के लिए मैं थोड़ी ईंटें तुम्हें उपहार में दे दूंगा.

हम बिना मजदूरी लिए तुम्हारा घर तैयार कर देंगे.

लोगों की बातें सुनकर उसे बड़ी तसल्ली हुई और उसने अपने आंसू पोंछ लिए.

और सचमुच में सभी लोगों की मदद से उसका नया मकान शीघ्र ही तैयार हो गया. केवल छत डालनी शेष रह गई.

छत डालने का कार्य महंगा था. गरीब आदमी लोगों से मांगकर भी उपयुक्त धन जुटा न सका.

मैं छत फिर कभी बनवा लूंगा. आप लोग सरपत की चटाई लाकर छत के स्थान पर रख दें, और थोड़ी सी मिट्टी ऊपर डाल दें.

जी, बहुत अच्छा.

सस्ती छत डालकर भी दूर से सच्चाई नहीं मालूम पड़ती थी. मकान सुन्दर

पास के गांव में रहने वाला रग्क चोर रग्क दिन उधर से गुजरा तो नया मकान देखकर आश्चर्य-चकित रह गया.

जरूर यह गरीब आदमी अमीर हो गया है. कैसा सुन्दर मकान बनाया है. यहां चोरी करने से अच्छा माल हाथ लगेगा.

रात गहरी हो जाने पर चोर चुपके से मकान की छत पर चढ़ा.

लेकिन जैसे ही छत पर चलने के लिए उसने अपना रग्क कदम आगे बढ़ाया...

ओह! यह क्या हुआ?

इससे पहले कि वह कुछ समझे, चोर घर के भीतर सोये हुए मालिक के ऊपर जा गिरा.

धप्प

हड़बड़ाकर गरीब आदमी की नींद टूट गई और वह चोर को पकड़ने के लिए भागा.

कौन है? कौन है?

मगर चोर अंधेरे का लाभ उठाकर भाग गया गरीब आदमी उसे पकड़ न सका.

ओह भाग गया!

दूसरे दिन चोर राजा के दरबार में जा पहुंचा. उसने राजा को अपनी शिकायत बतानी चाही–

कौन हो तुम ?

हे राजाओं के राजा, महान बुद्धि वाले महाराजाधिराज, बलशाली महाप्रभु. मैं एक गरीब और दुखी चोर हूं. हुजूर के दरबार में अपनी फरियाद लेकर आया हूं.

जरूर सुनाओ, हमारे दरबार में चोर-साहूकार, गरीब-अमीर छोटे-बड़े सभी को न्याय मिलता है.

महाराज, मैं कल रात एक आदमी के घर चोरी करने गया. उसका मकान ईंट के बजाए चटाई से ढका था. उस पर मैं जैसे ही चढ़ा, नीचे गिर पड़ा. मेरे एक पांव में बड़ी चोट आई है. यह तो ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि मेरे एक पांव में ही चोट आई, वरना मेरे दोनों पांव भी टूट सकते थे हुजूर. आपसे विनती है कि उस घर के मालिक को कड़ी से कड़ी सजा दें.

तुम घबराओ मत श्रीमान् चोरजी! हम पूरा-पूरा न्याय करेंगे.

राजा ने चोर को तसल्ली दी.

इसके बाद राजा ने मकान मालिक, अर्थात् गरीब आदमी को अपने दरबार में बुलवाया और अदालत की कार्यवाही शुरू की –

गरीब आदमी मन ही मन समझ गया कि उसे इस राजा से इन्साफ नहीं मिल सकता. अतः जान बचाने के लिए उसके मन में एक युक्ति आ गई.

दूसरे दिन छत बनाने वाला दरबार में हाजिर हुआ.

तुमने कच्ची छत बनाई है. तुम्हें फांसी दी जाती है.

हुजूर, फांसी देने से पहले मेरी बात तो सुन लें.

जल्दी बोलो, क्या कहना चाहते हो?

हुजूर! चटाई बनाने वाले ने इतनी पतली और कच्ची चटाई बनाई थी कि किसी के भी वजन से उस छत को गिरना ही था. अब भला इसमें मेरा क्या कसूर है.

राजा ने छत वाले की बात मान ली और -

चटाई बनाने वाले को इसी वक्त पकड़कर लाओ और फांसी पर चढ़ा दो.

जो आज्ञा अन्नदाता!

राजा के आज्ञाकारी सैनिक चटाई बनाने वाले को पकड़ लाए और सीधा फांसीघर ले जाने लगे. वह रास्ते में चीखने-चिल्लाने लगा -

अरे जालिमो! मुझे एक बार राजा से तो मिल लेने दो.

सैनिक उसे खींचते रहे

नहीं, राजा ने मिलने के लिए नहीं, फांसी देने के लिए कहा है.

राजा, जो बुर्ज पर खड़ा था, ने चटाई वाले की चीख-पुकार सुन ली. उसे कुछ दया आ गई. वह बुर्ज पर से ही बोला -

इसे हमसे मिलने दिया जाए. मरने से पहले इसकी यह इच्छा पूरी करने में कोई बुराई नहीं है.

जो आज्ञा अन्नदाता!

महल में-
मेरे मालिक, मेरे देवता! मुझ पर विश्वास करो. मैंने हमेशा मजबूत चटाइयां बनाई हैं. मगर कुछ समय से मेरा रुख पड़ौसी जबरदस्त कबूतर प्रेमी हो गया है. उसके कबूतर आकाश में चक्कर काटते रहते हैं. इससे मेरा ध्यान बंट जाता है और मैं मजबूत चटाइयां नहीं बना पाता हूं.
ठीक ही तो कहता है बेचारा!
सैनिको, इसे छोड़ दो और कबूतर प्रेमी को हमारे सामने पेश करो. हमारे राज्य में हम कभी अन्याय नहीं होने देंगे.

आखिर सैनिक कबूतर प्रेमी को भी पकड़ लाए. राजा ने उसे भी फांसी की सजा सुना दी. कबूतर प्रेमी ने भी महाराज को अपना तर्क दिया-
महाराज, आप तो महान हैं. स्वयं जानते हैं. कि कबूतर उड़ाना कोई कसूर नहीं है, बल्कि यह तो मुल्क में अमन और शांति के प्रतीक हैं. यदि आप मेरे बदले चोर को सजा देंगे तो प्रजा आपकी जय-जयकार करेगी.

चोर को फांसी देने से प्रजा हमारी जय-जयकार करेगी.
ooo.

शाबाश! यह तो तुमने हमारे फायदे की बात बताई. तुम्हारे जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को हम आज ही अपना मंत्री नियुक्त करते हैं और चोर को फांसी की सजा देते हैं.

सैनिकों ने राजा के आदेश के अनुसार चोर को फांसी देने के लिए ढूंढ लिया और उसे फांसी देने के लिए फांसीघर ले गए. पर संयोग से चोर बहुत ही लंबा आदमी था. जल्लादों ने फंदा ऊंचा करने की भरसक कोशिश की, लेकिन फिर भी चोर के पांव जमीन पर ही रहे.

आखिर जल्लाद राजा के पास पहुंचे.

महाराज! चोर बहुत लम्बा है. उसके पांव जमीन पर ही रहते हैं. इसलिए उसे फांसी नहीं दी जा सकती.

अरे मूर्खो, छोटी-छोटी बातों को लेकर मेरे पास मुझे परेशान करने चले आते हो. यदि चोर बहुत लम्बा है तो चौराहे पर जाकर किसी नाटे आदमी को ढूंढ कर फांसी लगा दो. क्या यह कोई कठिन समस्या है?

अच्छा अन्नदाता! हम अभी किसी नाटे आदमी को ढूंढ लाते हैं.

जल्लाद सड़क पर पहुंचे. देखा कि एक नाटा आदमी अपने कंधे पर आटे की बोरी लिए चला आ रहा था.

फांसी के लिए इसका नाप ठीक रहेगा.

राजा का आदेश हम लोगों के लिए कानून है.

चलो! इसे जल्दी से पकड़कर फांसी पर चढ़ा दें. नहीं तो यह भी राजा के पास पहुंचकर अपनी जान बचा लेगा.

जल्लादों ने दौड़कर उस नाटे आदमी को पकड़ लिया और खींचते हुए फांसीघर ले गए.
अरे, छोड़ दो मुझे. कहां ले जा रहे हो ?
फांसी देने !

नाटे के गले में फांसी का फंदा डाला ही था कि राजा भी टहलता हुआ वहां तक आ पहुंचा.
हुजूर, मेरे मालिक! मुझे आपसे कुछ निवेदन करना है.
जानता हूं, वही निवेदन करोगे जो अभी तक सभी लोग करते आ रहे थे. करो, तुम भी निवेदन कर लो.

मैं गरीब आदमी सामान ढो-ढोकर अपने बाल-बच्चों का पेट भरता हूं. आखिर मेरा कसूर क्या है, जो मेरे बच्चों को अनाथ किया जा रहा है.
मुझे तुम्हारा कसूर नहीं मालूम. मुझे जिस चोर को फांसी पर लटकाना है उसके पांव बहुत लम्बे हैं. इसलिए उसे फांसी नहीं लग सकती. तुम्हारा आकार बिल्कुल ठीक है.

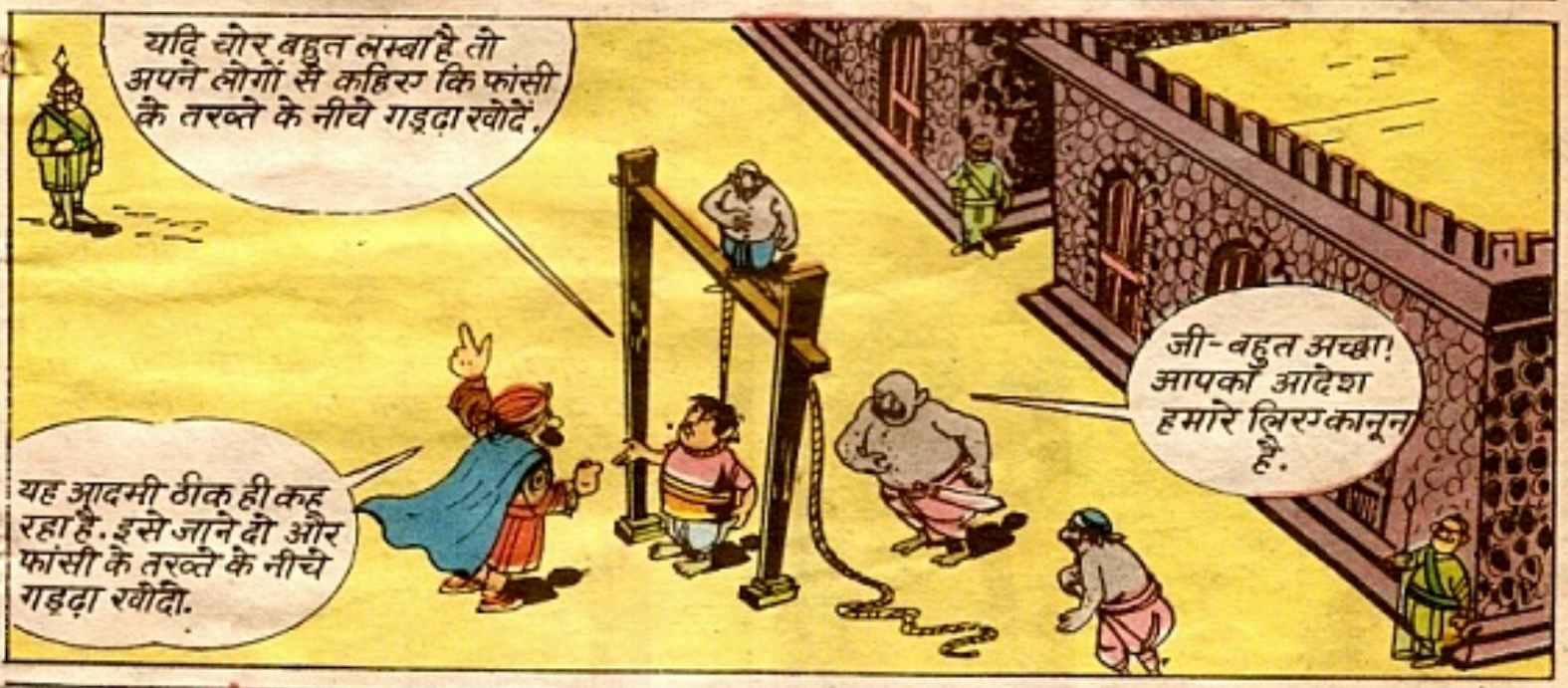

प्रजा के रक्षक, अन्न दाता! कसूर करे लम्बा आदमी और फांसी चढ़े नाटा। ऐसे में तो इन्साफ नहीं हो सकेगा.
फिर किस तरह हो सकेगा? तुम्हीं बता दो.
यदि चोर बहुत लम्बा है तो अपने लोगों से कहिए कि फांसी के तख्ते के नीचे गड्ढा खोदें.
यह आदमी ठीक ही कह रहा है. इसे जाने दो और फांसी के तख्ते के नीचे गड्ढा खोदो.
जी-बहुत अच्छा! आपका आदेश हमारे लिए कानून है.
जल्लादों ने चोर को पुनः फांसी के तख्ते पर खड़ा किया. उसके गले में फंदा डाला और उसके पांव के नीचे गड्ढा खोदना आरम्भ कर दिया.
अब देखता हूं, कैसे बचता है, यह चोर का बच्चा!

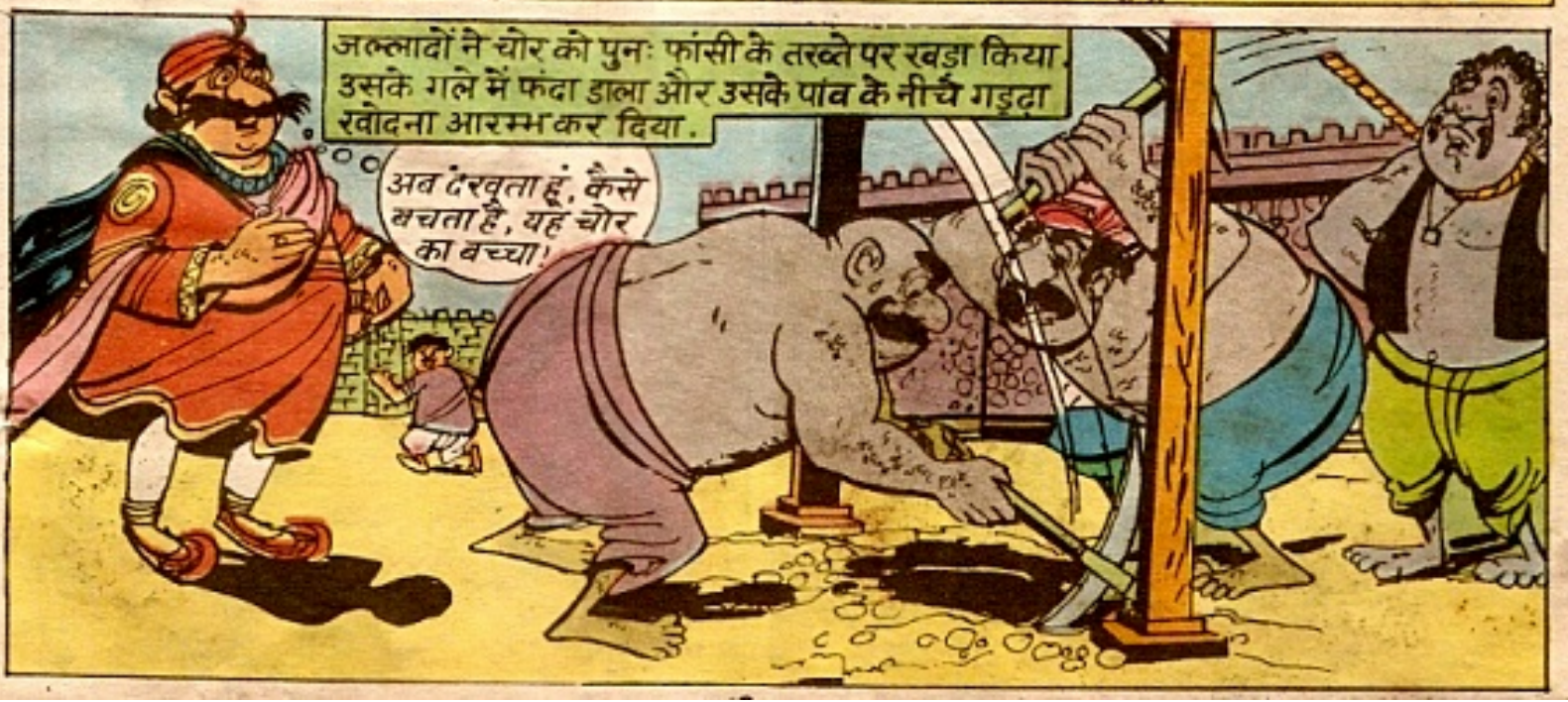

अचानक ही चोर कह उठा-
अरे भाई जल्लादो, जरा जल्दी खोदो. मुझे जल्दी फांसी दो, नहीं तो देर हो जाएगी.
यह तो बड़ा बहादुर है. फांसी से डरता ही नहीं है.
बड़ी जल्दी मचा रहे हो. क्या तुम्हें फांसी से डर नहीं लगता ?
मेरे मालिक! स्वर्ग का राजा अभी-अभी मरा है और अपनी मृत्यु से पहले उसने कहा है – धरती का जो भी पहला आदमी मर कर स्वर्ग आएगा, उसी को वहां का राजा बना दिया जाएगा. आप मेहरबानी करके तत्काल मुझे फांसी दे देंगे तो मैं किसी अन्य से पहले स्वर्ग चला जाऊंगा और वहां का राजा बन सकूंगा.

चोर की बात सुनकर राजा के मन में लोभ आ गया.

यह चोर तो बड़ा चालाक मालूम पड़ता है. मुझ से भी बड़ा राजा बनना चाहता है.

अगले पल-

जल्लादो, इस चोर को छोड़ दिया जाए और हमें फांसी लगा दी जाए.

जो आज्ञा अन्नदाता! आपका हुक्म हमारे सिर कानून है.

और जल्लादों ने मूर्ख राजा को फांसी पर चढ़ा दिया.

मूरख लोटाराम

एक गांव में लोटाराम नाम का एक अहीर रहता था. उसकी आदत थी कि जब भी वह किसी साधु या महात्मा को देखता, तुरन्त जमीन पर लेट कर दण्डवत करता.

प्रायः रोज उसके घर दो-एक साधु- संन्यासियों का भोज होता रहता था. उसकी स्त्री धन्नो बड़ी सीधी-सादी और सुशील गृहणी थी. परन्तु अहीर लौटा राम का स्वभाव बहुत क्रोधी, कठोर और अंधविश्वासी था. जब भी उसका मन चाहा न होता तो वह तुरन्त डंडा उठाकर अपनी पत्नी को पीटने लगता.
अरी निकम्मी, जब मैंने तुझे पूरियां सेंकने के लिए कहा था तो तूने पराठे क्यों सेके?
रहने दो भक्त, भविष्य में फिर तुम्हारी पत्नी ऐसी भूल नहीं करेगी - इतनी सजा ही इसके लिए काफी है.

धन्नो सब कुछ सहते हुए अपने पति की आज्ञा का पालन करती और चुपचाप अपने भाग्य पर आंसू बहाती रहती.
हे प्रभु, कब तक ऐसा चलता रहेगा. कब आयेगी मेरे पति को सद्बुद्धि. इस प्रकार ही चलता रहा तो एक दिन सब कुछ बिक जायेगा.

एक बार-
आ... ह...! सिर फटा जा रहा है
धन्नो की तबीयत ठीक नहीं थी, फिर भी सुबह से दोपहर तक आठ साधुओं को भोजन बनाकर खिला चुकी थी. उसका पति गांव में किसी काम से गया हुआ था.

तभी लोटाराम दो पाखण्डी साधुओं को लेकर पहुंचा.
आइए- आइए महाराज. अभी आपके लिए गर्मागर्म भोजन तैयार करवाता हूं.
हे भगवान! अब क्या करूं, मुझ से तो उठा भी नहीं जा रहा.
अरी आलसी! तू पड़ी-पड़ी खाट क्यों तोड़ रही है- चल उठ जल्दी से चूल्हा जला कर खीर-पूरी बना ले. महात्माओं को भोजन कराना है. मैं बाजार से अभी चीनी और घी लेकर आता हूं.
ज...जी, बहुत अच्छा!
आज्ञा देकर दौड़ता हुआ लोटाराम बाजार चला गया.
पति की आज्ञा सुनकर धन्नो की आंखों में आंसू आ गये. पिटने के डर से वह उठी और धीरे-धीरे सब सामान जुटाने लगी.
वाह! क्या देवता इन्सान है लोटाराम!
हां! ऐसा भक्त मिलना मुश्किल है. दो-चार दिन अब आराम से कटेंगे.

तभी पड़ोस की किसी स्त्री ने आवाज दी-
बहन धन्नो, अरी बहन धन्नो!
अभी आई.

धन्नो बाहर निकल आई.
क्या कर रही थी बहन? अब कैसी तबीयत है?
महात्माओं के लिए भोजन तैयार कर रही थी.

भोजन! लेकिन अभी- अभी तो तुम चूल्हे - चौके से निपटी हो. फिर तुम्हारी तबीयत भी तो ठीक नहीं.
क्या करूं बहन! बस मजबूरी है. यदि नहीं करूंगी तो वे नाराज हो जाएंगे.

उसने धन्नो की हालत देखकर दुख प्रकट करते हुए कहा
बहन! किसी प्रकार इन निखट्टुओं को यहां से भगाओ. तुम्हारे आदमी का तो सिर फिर गया है.
लेकिन मैं करूं भी तो क्या? मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता.

मेरे दिमाग में एक तरकीब है. कान में सुन.
अच्छा!
फुस.. फुस..
और पड़ोसिन धन्नो के कान में कोई तरकीब बता कर चली गई.

पड़ोसिन के जाने के बाद धन्नो ने साधुओं के सामने ही आंगन में चूल्हा जलाकर पतीला चढ़ा दिया.
बड़ी भूख लगी है बेटी. जरा जल्दी करना.
बस थोड़ा और इंतजार कीजिए महाराज!

फिर वह खुद एक मटके में घी और हाथ में मूसल लेकर ड्योढ़ी के पास बैठ गई. वह मटके में से घी निकाल कर मूसल पर लगाती जाती और साथ ही रोती जाती.
अंय, यह इसे अचानक क्या हुआ? रो क्यों रही है-?
जरूर किसी बात का दुःख है.

परन्तु वह मूसल पर घी किसलिए लगा रही है..?
पूछ कर देखता हूं.

क्यों रो रही हो बेटी?
हां, बोलो बच्चा! क्यों रोती हो? क्या कष्ट है तुम्हें?

परन्तु धन्नो कुछ नहीं बोली. मूसल पर पूर्ववत् घी लगाती हुई आंसू बहाती रही.

जब साधुओं ने बार-बार पूछा तो धन्नो रोती हुई बोली—
क्या करियेगा पूछकर महाराज, हमारा भाग्य ही फूट गया है.
अरे बच्चा! महात्माओं से क्या छिपाना.
हां... हां... बोलो बच्चा, हम तुम्हारा सब कष्ट हर लेंगे.

मैं अपने लिए नहीं रो रही हूं महाराज! मुझे तो दुःख सहने की आदत पड़ गई है.
अंय!
तो फिर किसके लिए रो रही हो?

मैं आप लोगों के लिए रो रही हूं.
हमारे लिए?
कहकर धन्नो और जोर से रोने लगी.

साधुओं की समझ में कुछ नहीं आया तो वे फिर बोले-
हम समझे नहीं बच्चा. तुम्हारा मतलब क्या है? हमें कौन-सा कष्ट है?
हां बच्चा, महात्माओं से पर्दा न करो.

मैं बताने से मजबूर हूं, महाराज, मेरा आदमी जान जायेगा तो मुझे बहुत मारेगा.
नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा. हम उसे समझायेंगे. वह हमारा बड़ा भक्त है. तुम बताओ.
हां-हां- बताओ, डरो नहीं.

साधुओं के बहुत जोर देने पर धन्नो ने रोते हुवे कहा—
असल बात यह है महाराज! मेरे आदमी का दिमाग आज कई महीनों से खराब हो गया है. वह रोज दो-चार साधुओं को बुला लाता है...

...और उन्हें खीर-पूरी खिलाने के बाद जाते समय उनके मुंह में यह मूसल घुसेड़कर सारे दांत तोड़देता है.

हाय, मेरे दांत.
हा...हा...हा...ये दांत ही तो मुझे चाहिए.

रुक जाइए स्वामी, इन साधुओं पर दया कीजिए.
आ...ई...ई...

अतः आप लोगों को देखकर मुझे बड़ी दया आ रही है. इसलिए मूसल में घी लगा रही हूं कि आप लोगों को ज्यादा तकलीफ न होने पाये. यदि मेरी बात का यकीन न हो तो भीतर जाकर देख लीजिए. कोने में आदमी के दांतों का ढेर लगा है.
धन्नो की बात सुनते ही दोनों साधुओं का चेहरा सफेद हो गया.
हैं, इतना वृष्ट है लोटाराम!
हमारे दांत निकालने के लिए ही वह हमें अपने घर लाया है.
दूसरे ही क्षण भयभीत हो उन्होंने अपना सामान समेटा...
तुम्हारा भला हो बच्चा. सच्ची बात बता कर तुमने बहुत अच्छा किया, अब हमें प्रस्थान करते हैं.
जल्दी निकल चलो गुरु - कहीं वह आ धमका तो...!
और वे सरपट वहां से भाग लिये.
महाराज, रुकिए तो सही, अपने आदमी को मैं क्या जवाब दूंगी?
अरे बापरे!
भागो - भागो - रुको मत!

उनके जाने के कुछ देर बाद ही लोटाराम घर आ पहुंचा.
अरे- महात्मा लोग कहां गये?
नाराज़ होकर चले गये. मैंने बहुत रोका, लेकिन रुके ही नहीं

क्रोधित हो लोटाराम ने धन्नो के बाल पकड़ लिये.
क्यों- कैसे नाराज़ हुए वे-? जल्दी बोल.
आह! बताती हूं. वे यह मूसल मांग रहे थे. घर में केवल यही तो एक मूसल है. भला मैं कैसे दे देती. इस पर वे नाराज़ होकर चले गये.

सब कुछ सुनकर लोटाराम और अधिक क्रोधित हो उठा.
शैतान की बेटी. नालायक, तुमने एक मामूली से मूसल के लिए साधुओं को नाराज़ कर दिया- ला, इसे इधर दे. वे ज्यादा दूर नहीं गये होंगे. मैं अभी दौड़ कर दे आता हूं.
आह!
धन्नो ने चुपचाप मूसल उसके हाथ में थमा दिया.

और मूसल ले लोटाराम उस दिशा में दौड़ पड़ा जिधर साधु गये थे.
हे प्रभु, तेरा लाख-लाख शुक्र है. एक थप्पड़ में ही जान छूटी.

जल्दी ही उसे वे दोनों साधु तेजी से एक तरफ जाते दिखाई दे गये.
अरे, महात्माजी मूसल लेते जाइए!

आवाज सुनकर दोनों साधुओं ने पलटकर देखा, लेकिन फिर लोटाराम को मूसल लिए अपनी ओर दौड़ा आता देख उन दोनों के प्राण सूख गये. उन्हें विश्वास हो गया कि अपनी असफलता के कारण वह क्रुद्ध होकर उनके दांत उखाड़ने के लिए ही मूसल लेकर दौड़ा चला आ रहा है.

और लोटाराम के लाख चिल्लाने पर भी वे न रुके.

भागते-भागते ही उन्हें जो मार्ग में साधु-संन्यासी आता-जाता मिलता उसे भी वे लोटाराम के प्रति सतर्क करते जाते.

उसके बाद फिर कभी पाखंडी साधु-संन्यासियों ने उनके घर की तरफ रुख नहीं किया. यही नहीं, जब लोटाराम के बार-बार आग्रह करने पर भी साधु-संन्यासियों ने उसके घर जाना स्वीकार नहीं किया तो उसने भी साधुओं से आग्रह करना बंद कर दिया – और इस तरह धन्नो भी अपने पति के साथ सुख से रहने लगी.